शोध मंथन Vol. XVI No.3 July.- Sept. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.76

भारतीय वास्तुकला (खजुराहो के मंदिर)

प्राप्तिः 03.09.2025
स्वीकृतः 14.09.2025

76

विधि
टी. जी. टी. (कला विभाग)
ईमेलः *vidhitomar2207@gmail.com*

सारांश

भरतीय वास्तुकला में खजुराहो के मंदिरों का उत्कृष्ठ एवं अतुलनीय योगदान है ये मंदिर मध्य प्रदेश के छतरपुर जनपद में स्थित है, जो चंदेल राजवंश द्वारा 950 ई० से 1050 ई० के मध्य बनवाए गये थे। खजुराहो में कभी लगभग 85 मंदिर थे, जिनमें से आज केवल 20 मंदिर ही सुरक्षित बचे है खजुराहो के मंदिर नागर शैली की वास्तुकला को प्रदर्शित करते है, जिनमें ऊँचे शिखर व विस्तृत आधार होते हैं। जिनसे इन मंदिरों की भव्यता और बढ़ जाती है। ये मंदिर भारतीय शिल्प कला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करते हैं, जिनमें मंदिरों की बाहरी दीवारों पर सुंदर, बारीक और जीवंत मूर्तियाँ उकेरी गयी है। अन्य मूर्तियों में देवी–देवताओं की मूर्तियाँ, संगीत, नृत्य, दैनिक जन–जीवन (कामसूत्र पर आधारित मूर्तियाँ) सम्मिलित है। मंदिरों को तीन भागों गर्भग्रह, मण्डप और शिखर में विभाजित किया गया है। यहाँ पर हिंदू धर्म व जैन धर्म से सम्बन्धित मंदिर जो भारतीय धार्मिक विविधता को प्रदर्शित करते है। यहाँ के प्रमुख मंदिर, कंदरिया महादेव मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, विश्वनाथ मंदिर और पार्श्वनाथ जैन मंदिर है। खजुराहो को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित किया गया है। खजुराहो के मंदिर भारतीय प्राचीन वास्तुकला, मूर्तिकला और सांस्कृतिक समृद्धि के अद्भुत उदाहरण है। इन मंदिरों की भव्यता और सूक्ष्मता विश्वभर में भारतीय कला और स्थापत्य को एक विशिष्ट पहचान दिलाती है।

वैदिक भारतीय परम्परा में वास्तु को वेदांग से समुद्भूत कहा गया है। इसका विशेष सम्बन्ध ज्योतिष तथा कल्प के साथ जोड़ा गया है स्थापत्य को कुछ लेखको ने चार उपवेदों में से एक माना है। स्थापत्य या वास्तु को एक ललित कला माना गया है। वास्तुकला भवन निर्माण की कला है।

ऋग्वेद प्रथम ग्रन्थ है जिसमें अर्चा–वास्तु (यज्ञशाला, वेदों आदि) तथा लौकिक वास्तु (ग्रह, पुर आदि का निर्माण) वर्णित है। सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि भारतीय कला जहां एक ओर धार्मिक संस्कारों से अनुप्रणित है वहां दूसरी और सौन्दर्य तथा आनन्द के तत्वों से पूर्ण है। कलाकारों ने भारतीय शिल्प के विभिन्न अंगों को कल्पना द्वारा चारूत्व से मण्डित किया। पुराणों, साहित्यों की उपासना पद्धति ने विष्णु, सूर्य, शिव आदि देवों की पूजा–अर्चना को विस्तार दिया और मंदिर धार्मिक वास्तु के मुख्य प्रतीक बन गये।

भारतीय मंदिर– वास्तु का इतिहास अत्यन्त रोचक है। भारतीय मंदिरों के निर्माण सम्बन्धी विविध उल्लेख प्राचीन साहित्य में उपलब्ध है। पुरातत्वीय अवशेषों में मंदिरों के स्वरूप प्राचीन मूर्तियों, सिक्कों, मुद्राओं आदि में देखने को मिलते हैं। इस स्वरूपों को देखने से ज्ञात होता है कि आरम्भ में मंदिर या देवायतन सीधे सादे रूप में बनाये जाते थे। प्रकृति भूमि से कुछ ऊँचे स्थान पर प्रतिमा स्थापित की जाती थी। उसके चारों ओर वेदिका या बाड़े का निर्माण होता था। बाद में वेदिका को ऊपर से भी आच्छादित कर देते थे। प्राचीन आहत सिक्कों तथा औदुम्बरों, पंचालों, आदि की मुद्राओं में मंदिर का यही सादा रूप देखने को मिलता है। मथुरा, विदिशा, मध्यमिका आदि अनेक प्राचीन नगरों में संकर्षण और वासुदेव के देवमंदिरों का यही रूप था। जैन तीर्थंकरों, यक्षों तथा नागों के लिए भी जिन मंडपिकाओं का निर्माण हुआ, उनका स्वरूप उक्त मंदिरों जैसा था।

प्राचीन भारत में मंदिरों की दो मुख्य शैलियाँ–नागर तथा द्राविड़ मिलती है। पहली का सम्बन्ध उत्तर तथा दूसरी का सम्बन्ध दक्षिण भारत से है। इन दोनों शैलियों के कतिपय तत्वों के मिश्रण से एक तीसरी शैली बेसर (दव्यश्र) का उदय हुआ। दोनों मुख्य शैलियों पर आश्रित होने के कारण उसका यह नाम सार्थक हुआ।

नागर शैली के मुख्य आचार्य शंभु, गर्ग, अत्रि, वसिष्ठ, पराशर, बृहद्रथ, विश्वकर्मा तथा वासुदेव कहे गये हैं। दक्षिणी परम्परा वाली द्रविड़ शैली के आचार्य ब्रह्मा, त्वष्ट्रा, गय, मातंग, भृगु, काश्यप आदि थे। इनमें से अनेक आचार्य विभिन्न शास्त्रों के लेखक कहे गये है। वास्तुशास्त्र के उद्भावकों में विश्वकर्मा तथा मय के नाम अधिक प्रसिद्ध है। वास्तुशास्त्र– विषयक पुराणों में विष्णु धर्मोत्तर पुराण प्रमुख है। उत्तरी परम्परा के मुख्य वास्तुशास्त्रीय ग्रन्थ 'सूत्रधारमडन', 'विश्वकर्म प्रकाश', समरांगणसूत्रधार', 'वास्तुरत्नावली' आदि हैं। दक्षिणी वास्तु–परम्परा के ग्रन्थों में 'विश्वकर्मीय शिल्प', 'मयमत', 'मानसार', 'काश्यप शिल्प', 'अगस्त्य सकलाधिकार', 'शिल्प–संग्रह', 'शिल्परत्न' तथा 'चित्रलक्षण'।

मंदिर वास्तुकला का प्राचीनतम इतिहास तीसरी शताब्दी के अन्त में प्रयाग तथा उसके आस–पास गुप्तवंश के रूप में हुआ। गुप्त वंश का नामकरण इस वंश के प्रथम शासक श्रीगुप्त के नाम पर हुआ। राजा चन्द्रगुप्त ने 'महाराजधिराज' की उपाधि धारण को और मंदिर वास्तुकला को चरम पर पहुँचाया। मंदिर–वास्तु के अतिरिक्त गुप्तकाल में बौद्ध तथा जैन धर्म के अनेक स्तूपों का निर्माण हुआ। गुप्त युग धार्मिक सहिष्णुता का युग था। अधिकांश गुप्तवंशी शासक यद्यपि वैष्णव थे, किन्तु अन्य सभी धर्मो के प्रति भी वे सम्मान का भाव रखते थे। गुप्तकाल में वैष्णव शैव, शाक्त, सौर आदि मतों के साथ बौद्ध–जैन धर्म तथा विविध लोक धर्म बराबर विकसित होते रहे। इन विविध धर्मों

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.76

से सम्बन्धित देवालयों, स्तूपों, बिहारों, आदि के जो अवशेष प्राप्त हुए हैं, उन्हें देखने से ज्ञात होता है कि शासक–वर्ग एवं जनता दोनों में धर्म के प्रति उदार भावना बड़ी मात्रा में विद्यमान थी।

गुप्त युग के शान्त एवं सहिष्णु वातावरण में अन्य ललित कलाओं के साथ मूर्तिकला के सर्वांगीण, विकास का सुअवसर प्राप्त हुआ। कालिदास, विशाखादत्त व रविकीर्ति आदि तत्कालीन कवियों ने जहां अपने काव्यों और नाटकों के रूप में वाग्देवी के लिए सरस सुन्दर हार पिरोये, वहीं मूर्तिकला के पुजारियों ने अपने उद्धात भावों को पत्थर, मिट्टी और धातु के माध्यम द्वारा शाश्वत रूप प्रदान किया। कालिदास कहते है कि रूप या सौन्दर्य पापवृत्तियों को उकसाने का साधन नहीं बल्कि उसका उद्देशय ऊँचा है। उसमें शील का होना आवश्यक है।

यतुच्यते पार्वति, पापवृत्तये न रुपमित्यव्यभिचारि तद्वः
तथा हिते शील–मुदार दर्शने, तपस्विनामप्युपदेश्तां गत।

वास्तुकला के साथ मूर्तिकला का संयुक्त सम्बन्ध गुप्तकाल में मुख्यतः देखने को मिलता है। देवगठ का दशावतार मंदिर गुप्तकला का उत्कृष्ठ नमूना है। पूर्व मध्यकाल में विभिन्न क्षेत्रों में मंदिर निर्माण की प्रवृति बहुत बढ़ी। मंदिर धार्मिक, सामाजिक तथा शैक्षिक विकास के केन्द्र बने। इस विचारधारा को मंदिर के माध्यम से व्यावहारिक रूप प्रदान किया गया कि राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति हेतू देवालय सर्वाधिक उपयुक्त है। मंदिरों का महत्व बढ़ जाने से उनके रुप–विन्यास में वृद्धि हुई है। मंदिरों के आकार–प्रकार में वृद्धि हुई। उनके 'पंचायतन' तथा 'सांधार' रूप विकसित हुए। खजुराहो का लक्ष्मण मंदिर पंचायतन का सुन्दर उदाहरण है। मंदिरों में विद्यालय, संगीत तथा नाट्यशाला स्थापित हुई। उनके साथ उद्यान तथा छोटी–बड़ी पुष्करणियाँ बनने लगी। जो बात इस काल में उत्तर भारत के सम्बन्ध में लागू होती है, वही दक्षिण के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है, अन्य छोटे राजवंशों के समय में भी ललित कलाओं को बड़ा प्रोत्साहन मिला। मंदिर वास्तु को अष्टांगों में विभाजित किया गया है–

1. अधिष्ठान या चौकी
2. वेदिवंध
3. अन्तर पत्र
4. जंघा
5. वरंडिका
6. शुकनासिका
7. कण्ठ या ग्रीवा
8. शिखर

आकृतियों के आधार पर मंदिरों की विभिन्न संज्ञाएँ रूढ़ हुई। मंदिरों की पंचायतन, पूर्णभद्र, षोडशभद्र आदि संज्ञाएँ तथा उनके सांगोपांग विवरण सम्मिलित वास्तुशास्त्र है।

भारतीय वास्तुकला में खजुराहो के मंदिरों का योगदान नागर शैली के विकास में महत्वपूर्ण है, खजुराहो स्मारक समूह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और कलात्मक प्रतिभा का प्रमाण है।

मध्य प्रदेश के वर्तमान छतरपुर जिले में संसार प्रसिद्ध खजुराहो स्थित है। मध्यकालीन चन्देल राजवंश के शासनकाल में इस स्थान पर कला का अप्रतिम उन्मेष हुआ। खजुराहो के मंदिर पूर्ण–मध्यकालीन भारतीय वास्तु तथा मूर्तिकला के उत्कृष्ठ माने जाते हैं।

जिस प्रकार संस्कृत साहित्य में माघ कवि कालिदासोत्तर अलंकृत काव्य शैली के उद्भावक कवि माने जाते हैं, उसी प्रकार खजुराहो के मंदिर मध्यकालीन प्रासाद–वास्तु के प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं। खजुराहों के मंदिरों का निर्माण चंदेल वंश के शासनकाल में 10वी और 12वी शताब्दी के मध्य हुआ। इस समय कला और स्थापत्य कला का उत्कर्ष हुआ, जो सामाजिक–राजनीतिक परिवेश से गहराई से जुड़ा हुआ था। भारतीय वास्तुकला में खजुराहों के मंदिरों का योगदान नगर शैली के विकास में महत्वपूर्ण है, जहाँ ऊँचे शिखरों, ऊँचे चबूतरों (जगती) और जटिल मूर्तियों द्वारा वास्तुकला और धार्मिक सौन्दर्य का अनुठा संतुलन प्रस्तुत किया गया है। खजुराहो के मंदिर अपनी वास्तुशिल्पीय विशिष्ठताओं जैसे गर्भग्रह, मंडप, अंतराल और उरुश्रृंगों के साथ–साथ मुर्तिकला की समृद्धि के लिए जाने जाते हैं।

भारत में 20 लाख से अधिक हिंदू मंदिर है। भारत की मंदिर वास्तुकला में हमेशा एक अंतर्निहित दृष्टिकोण प्रदर्शित होता है। यह दृष्टिकोण अनुभूति, स्थान और समय का प्रतीक होता है। हिंदू मंदिरों के निर्माण से संबंधित कला और वास्तुकला शिल्प शास्त्र में मुख्यतः वर्णित है। इनमें नागर या उत्तरी शैली, द्रविड़ या दक्षिणी शैली, और बेसर या मिश्रित शैली भारत की तीन मुख्य मंदिर वास्तुकला शैलियों का वर्णन है।

खजुराहो और इसके मंदिरों का पहला उल्लेख अबू रेघन अल बिरुनी (1022 ई०) और इब्न बतूता (1335 ई० वृत्तांतों में मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि खजुराहों के मंदिर 20 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए थे। 12वीं शताब्दी में यहाँ लगभग 85 मंदिर थे समय के साथ–साथ खजुराहो में मंदिरों की संख्या घटकर आज केवल 20 रह गई है। चंदेल राजवंश के शासक शैव पंथ के अनुयायी थे, परंतु उनकी वैष्णववाद और जैन धर्म के प्रति गहरी रुचि थी। यूनेस्को द्वारा खजुराहो के मंदिरों को वैश्विक धरोहरों में प्रमाणित किया है। मंदिरों की नक्काशी मुख्य रूप से हिंदू देवी–देवताओं और पौराणिक कथाओं से सम्बन्धित है। हिंदू परंपराओं के अनुसार मंदिर का मुख्य सूर्योदय की दिशा की ओर होना चाहिए और खजुराहो के सभी मंदिरों का निर्माण इसको ध्यान में रखकर किया गया है। इसके अतिरिक्त, यहाँ की नक्काशियाँ हिंदू धर्म के चार लक्ष्यों अर्थात धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष को दर्शाती है। चंदेलों को ललित कलाओं, संगीत और नृत्य की विभिन्न शैलियों में गहरी रुचि थी। यह लक्ष्य इन मंदिरों की दीवारों पर संगीत और नृत्य के विभिन्न दृश्यों को प्रदर्शित करने वाली मूर्तियों से स्पष्ट है।

खजुराहो के मंदिरों में कामुक भाव बहुत सामान्य है। चौड़े कूल्हों, भारी स्तनों, और लालसा भरी आंखों वाली स्वर्गीय अपस्राओं की मूर्तियाँ आमतौर पर कंदरिया महादेव और विश्वनाथ मंदिर में पाई जाती है। ऐसी मान्यता है कि यह मूर्तियाँ स्त्री सौन्दर्य और प्रजनन क्षमता की अवधारणा को दर्शाती है। मंदिरों की दीवारों पर दर्शाएँ गए अन्य दृश्य मानव जीवन चक्र का भाग हैं, जो यह दर्शाते हैं कि यौन प्रसव और काम मानव जीवन के अनिवार्य पहलू है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.76

खजुराहो के मंदिरों के अध्ययन का प्रमुख केन्द्र मूर्तियाँ रही हैं। इन मंदिरों की दीवारों पर उस समय की कुछ सर्वश्रेष्ठ मूर्तियाँ हैं, जिसके कारण खजुराहो सर्वोत्कृष्ठ कलात्मक विशेषताओं का केन्द्र बन गया है। ऐसा माना जाता है कि खजुराहों के मंदिरों में पाँच अलग–अलग प्रकार की मूर्तियों के वर्ग हैं–

1. पंथ–संबंधी मूर्तियाँ
2. परिवार, पार्श्व, आवरण देवता
3. अप्सराएँ और सुरसुंदरियाँ
4. विविध विषयों को दर्शाती गैर–धार्मिक मूर्तियाँ (नर्तक, संगीतकार, शिष्य, और घरेलू दृश्य)
5. पौराणिक जीव (व्याल, शार्दूल और अन्य पशु–पक्षी)।

मूर्तियों और कामुक छवियों के ये समूह दैनिक जीवन के दृश्य प्रदर्शित करत है। खजुराहो मंदिरों के इतिहास के साथ बहुत सी कहानियाँ जुड़ी हुई है। एक अवधारणा के अनुसार, इन मंदिरों का निर्माण शिव–शक्ति संप्रदाय के प्रसार का भाग माना जा सकता है।

दूसरी अवधारणा है कि ये मंदिर देवदासियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो कभी मंदिर की गतिविधियों का एक प्रमुख भाग हुआ करती थी। खजुराहो के मंदिरों में मगध, मालवा और राजपुताना से सबसे सुंदर महिलाओं को देवदासियों के रूप में प्रशिक्षण के लिए लाया जाता था। लोगों का कहना है कि देवदासियाँ जो मंदिरों की आंतरिक और बाहरी दीवारों पर बनी हैं। उनको वास्तविक जीवन से लिया गया था और देवी–देवताओं की मूर्तियों के साथ स्थापित किया गया था। एक अन्य अवधारणा के अनुसार ये मूर्तियाँ एक सामान्य मनुष्य का जीवन चक्र प्रदर्शित करती है। आज इन मंदिरों के निर्माण का वर्णन करने वाला कोई लिखित ग्रन्थ न होने के कारण, यह निश्चित रूप से कहना अनौचित्यपूर्ण है कि इनमें से कौन सी अवधारणा सही है।

इन मूर्तियों के निर्माण के पीछे के उद्देश्य के अतिरिक्त यह सुनिश्चित है कि दुनिया में सबसे अधिक अंलकृत, जटिल और सुंदर मूर्तियों का समूह, भेंद के रूप में प्राप्त हुआ है, जो आज भी विद्यमान है।

खजुराहो के मंदिरों को पश्चिमी समूह, पूर्वी समूह और दक्षिणी समूह में विभाजित किया गया है। खजुराहों के मंदिरों की वास्तुकला बहुत जटिल है। इन मंदिरों के मुख्य घटक हैं:

1. महामंडप, एक बड़ा सभाग्रह
2. अर्धमंडप और मंडप, जो छोटे अतिरिक्त सभाग्रह है।
3. प्रदक्षिणा पथ, एक परिक्रम पथ

खजुराहो के कुछ मंदिर पंचायतन प्रकार के हैं, जिनमें चार मंदिर देवताओं को समर्पित होते हैं और बहुदा एक अन्य मंदिर मुख्य देवता के वाहन को समर्पित होता है। यह माना जाता है कि खजुराहो के मंदिरों को केन नदी के पूर्वी तट से पत्ता की खदानों से मंगवाए गए हल्के रंग के भूरे पत्थर से बनाये गये है। मंदिरों के निर्माण में लोहे की कीलकों का भी बहुतायत में उपयोग किया गया है। कुछ अन्य छोटे मंदिर बलुवा पत्थर और ग्रेनाइट के मिश्रण से निर्मित है।

पश्चिमी समूह के मंदिर

पश्चिमी समूह के मंदिर बमीठा–राजनगर मार्ग के पश्चिम में शिवसागर झील के तट पर स्थित है। इस समूह सात मंदिर सम्मिलित हैं जो शैव एवं वैष्णव पंथों को समर्पित हैं।

1. चौसठ योगिनी मंदिर

यह मंदिर शिवसागर झील के दक्षिण–पश्चिम में एक नीचली पहाड़ी पर स्थित है। उत्तर–पूर्व और दक्षिण पश्चिम दिशा में स्थित, खजुराहो में पूरी तरह से ग्रेनाइट से निर्मित सह एकमात्र मंदिर है। यह मंदिर एक विशाल चबूतरे पर बना हुआ है, इसका प्रांगण 104 फीट लंबा और 60 फीट चौड़ा प्रांगण है। यह मंदिर 64 योगिनीयों को समर्पित था जो देवी काली की सेविकाएँ मानी जाती है। मंदिर की निश्चित आयु इंगित करने वाला कोई दिनांकित शिलालेख उपस्थित नहीं है।

2. कंदरिया महादेव मंदिर

खजुराहो के सभी मंदिरों में कंदरिया महादेव मंदिर सबसे बड़ा है। यह मंदिर 109 फीट ऊंचा और 60 फीट चौड़ा है। मंदिर की आंतरिक व्यवस्था अन्य हिंदू मंदिरों के सामान्य निर्माण से अलग है, क्योंकि इसके गर्भग्रह के चारों ओर एक खुला मार्ग है, जिसके प्रवेश द्वार पर फूलदार नक्काशियाँ हैं जिनके बीच में तपस्या में मग्न योगियों की मूर्तियाँ बनी हैं, चौखटों के आधारों पर जो स्त्री आकृतियाँ बनी हैं वे देवी गंगा (गंगा नदी) ओर देवी जमुना (यमुना नदी) की हैं। इन देवियों के साथ उनके अपने–अपने वाहन क्रमशः मगरमच्छ, और कछुआ भी बने हैं। गर्भग्रह के अंदर भगवान शिव का प्रतीक, एक संगमरमर का लिंग है।

3. देवी जगदंबा मंदिर

लगभग 77 फीट लंबा और 50 फीट चौड़ा, यह मंदिर अब देवी जगदंबा अथवा जगत की माता के नाम से जाना जाता है। गर्भग्रह के प्रवेश द्वार के केंद्र पर भगवान विष्णु की प्रतिमा होने के कारण, यह मंदिर मूलतः विष्णु को समर्पित है। जिससे दाएँ और बाएँ ओर शिव और ब्रह्म की प्रतिमाएँ है। इस मंदिर का निर्माण 10वीं शताब्दी में हुआ, जिस अवधि में चंदेल शासन अपने चरम पर था।

4. चित्रगुप्त या भरतजी का मंदिर

चित्रगुप्त मंदिर का मुख्य पूर्व की ओर है, इसकी लंबाई 75 फीट और चौड़ाई 52 फीट है। चित्रगुप्त मंदिर सूर्य देव को समर्पित है, जिसमें वे ऊँचे जूते पहने हुए, सात घोडों वाले रथ को चलाते हुए दर्शाए गए है। प्रतिमा की लंबाई 5 फीट है। मंदिर पर कोई शिलालेख नहीं है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.76

5. विश्वनाथ मंदिर

यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, जिसमें गर्भग्रह के प्रवेश द्वार पर 90 फीट लंबी, बैल पर सवार भगवान शिव की प्रतिमा है। इस मंदिर के शिलालेख पर राजा नानुका से लेकर राजा धंग तक चंदेल राजाओं की वंशावली का वर्णन है।

6. लक्ष्मण मंदिर

चतुर्भुज मंदिर के रूप में प्रसिद्ध यह मंदिर लगभग 99 फीट लंबा और 46 फीट चौड़ा है। यह मंदिर वास्तुकला में अपने नवाचार के लिए जाना जाता है। गर्भग्रह के प्रवेश द्वार पर ब्रह्म और भगवान शिव की प्रतिमाओं के साथ लक्ष्मी का भी अंकन है। मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी के आस–पास हुआ।

पूर्व समूह के मंदिर

पूर्व समूह के मंदिर खजुराहो गाँव के बहुत पास स्थित है। इस परिसर में तीन हिंदू और तीन बड़े जैन मंदिर– घंटाई मंदिर, आदिनाथ मंदिर और पार्श्वनाथ मंदिर सम्मिलित हैं। हिंदू मंदिर भगवान ब्रह्म, वामन और जावरीको समर्पित है।

1. ब्रह्मा मंदिर

ब्रह्मा मंदिर सागर झील के तट पर स्थित है। इस मंदिर के गर्भग्रह में चार मुख वाली प्रतिमा संभवतः भगवान शिव की है। गर्भग्रह में भगवान विष्णु की प्रतिमाएं हैं, यह मंदिर ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर से निर्मित है।

2. वामन मंदिर

यह मंदिर ब्रह्म मंदिर के उत्तर–पूर्व की ओर स्थित है, यह मंदिर एक ऊँचे चबूतरे पर बना है। गर्भग्रह के अंदर 5 फीट ऊँची भगवान विष्णु के वामन अवतार की सुंदर प्रतिमा है।

3. घंटाई मंदिर

घंटाई मंदिर में जैन तीर्थंकरों की 11 नग्न प्रतिमाएँ और दो यक्षणियों की प्रतिमाएं है। प्रवेश द्वार के ऊपर गरुड़ पर सवार आठ भुजाओं वाली जैन देवी की आकृति है, जिनके हाथों में विभिन्न हथियार है।

4. पार्श्वनाथ जैन मंदिर

यह मंदिर, जैन मंदिरों में सबसे बड़ा है, जो 69 फीट लंबा और 35 फीट चौड़ा है। मंदिर के बाईं और एक नग्न पुरुष और दाई ओर एक नग्न महिला की आकृति है और केन्द्र में ऊपर तीन बैठी हुई महिलाओं की प्रतिमाएं है। प्रवेश द्वार के ऊपर एक दस भुजाओं वाली जैन देवी हैं, जो विभिन्न अस्त्र–शास्त्र धारण करके गरुड़ पर विराजमान है। तीर्थ यात्रियों के तीन छोटे अभिलेख भी हैं।

दक्षिणी समूह के मंदिर

दक्षिणी समूह में धुलादेव और जटकारी मंदिर सम्मिलित है।

1. धुलादेव मंदिर

यह मंदिर खजुराहो के मुख्य मंदिरों से लगभग डेढ़ मील दूर है और मुख्य रूप से शिव पंथ को समर्पित है। यह मंदिर 70 फीट ऊंचा और 41 फीट चौड़ा है। इस मंदिर में पांच कक्ष है, जिसमें चतुर्भुज गण और एक शंख से युक्त नक्काशी का एक अनूठा समूह है। इस मंदिर का निर्माण 10वीं शताब्दी में हुआ।

2. जटकारी या चतुर्भुज मंदिर

पश्चिम की ओर मुख वाला यह मंदिर जटकारी गांव के पास स्थित है। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है, जिसके गर्भग्रह में लगभग 9 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित है। भगवान विष्णु की चतुर्भुज प्रतिमा मुकुट ओर अन्य आभूषणों से सज्जित है। प्रतिमा का ऊपरी दाहिना हाथ अभय– मुद्रा में उठा हुआ है ओर उस पर एक गोलाकार चिन्ह है।

मंदिरों की औपचारिक रचना में, एक हजार वर्ष पूर्व के कारीगरों ने इस प्रकार जीवन चक्र बनाया और हिंदू और जैन देवताओं के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया है। इसके अतिरिक्त ये मूर्तियाँ चित्रित किए गये विषयों की अद्वितीय विविधता के लिए भी उल्लेखनीय हैं। सुरसुंदरियों के कामुक रूप से प्रतिरूपित शरीरों तथा वस्त्रों और आभूषणों की लहरों और वक्रों का सुन्दरता से चित्रण किया गया है। खजुराहों के मंदिर प्रारंभिक काल में हमारे देश की कलाओं के संभवतः सबसे अधिक मानवतावादी निरुपण है।

खजुराहो की मूर्तियाँ और नक्काशी कलात्मक प्रतिभा का अद्भुत स्तर प्रदर्शित करती है। कारीगरों ने सूक्ष्मता और सूक्ष्मता के साथ दिव्य प्रेम, मानवीय भावनाओं और आध्यात्मिक ज्ञान की खोज को उकेरा गया है। खजुराहो परिसर का प्रत्येक मंदिर अद्वितीय कलात्मक शैली प्रदर्शित करता है, जो उस समय की विकसित होती संवेदनशीलता को दर्शाता है। धार्मिक और सांस्कृतिक आख्यानों को व्यक्त करने में कला की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जो इन मंदिरों को आंगुतकों के लिए एक दर्शनीय शोभा को प्रदर्शित करती है।

सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व

खजुराहो के मंदिर हिंदू और जैन धर्म में गहरा आध्यात्मिक महत्व रखते हैं। खजुराहो पूजा और तीर्थस्थल के केन्द्र हैं और देश भर से श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। इन पवित्र स्थलों में ऐतिहासिक और समकालीन दोनों तरह के अनुष्ठान और समारोह आज भी आयोजित किये जाते हैं। यहां की कामुक मूर्तियां भी चर्चा का विषय है, जो अक्सर तांत्रिक दर्शन और जीवन के विभिन्न पहलुओं के उत्सव के संदर्भ में व्याख्यायित की जाती हैं। मंदिरों की स्थापत्य शैली और कलात्मक रुपांकनों ने परवर्ती भारतीय मदिर स्थापत्य कला को प्रभावित किया और देश के कलात्मक परिदृश्य पर एक अमिट विरासत छोड़ी।

संरक्षण

खजुराहो के मंदिरों के संरक्षण के लिए पर्यावरणीय कारकों, पर्यटन पर पड़ने वाले प्रभाव और शहरीकरण जैसी चुनौतियों का समाधान करने हेतु निरंतर प्रयास आवश्यक है। यूनोस्को, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के सहयोग से, इन अमूल्य स्थलों की सुरक्षा हेतु संरक्षण पहलों का नेतृत्व करता है। तकनीकी प्रगति इन प्राचीन संरचनाओं की दीर्घायु सुनिश्चित करते हुए, जीर्णोद्धार

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.76

तकनीकों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस स्थल की विरासत और सांस्कृतिक महत्व को बनाए रखने के लिए सामुदायिक भागीदारी भी आवश्यक है।

खजुराहो के मंदिर समकालीन भारत में भी अपूर्व सांस्कृतिक महत्व रखते हैं। ये न केवल राष्ट्रीय गौरव का स्त्रोत हैं, बल्कि वैश्विक विरासत की गाथा का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। ये मंदिर भारत की ऐतिहासिक सहिष्णुता और विविधता के उत्सव की याद दिलाते हैं, और समय को दर्शाते हैं जब विभिन्न संस्कृतियाँ और धर्म एक साथ फलते–फूलते थे।

प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला खजुराहो नृत्य महोत्सव एक प्रमुख सांस्कृतिक आयोजन बन गया है, जो सम्पूर्ण विश्व के कलाकारों और पर्यटकों को आकर्षित करता है। इस महोत्सव में मंदिरों की पृष्ठभूमि में शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किये जाते हैं, जो भारत की कलात्मक विरासत का उत्सव मनाते हैं और नृत्य की पारम्परिक और समकालीन, दोनों व्याख्याओं के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

जटिल नक्काशी, भव्य वास्तुकला और आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य मिलकर खजुराहो एक ऐसा स्थान बनाता है, जो समय से परे है, चिंतन व प्रशंसा को आमंत्रित करता है।

संदर्भ

1. प्रताप, डॉ0 रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास।
2. अग्रवाल, डॉ0 गिर्राज किशोर, कला और कलम।
3. शर्मा, डॉ0 गोपीनाथ, राजस्थान का इतिहास।
4. वर्मा, डॉ0 अविनाश बहादुर, वर्मा, अनिल, वर्मा, संगीता।
5. भारतीय चित्रकला का इतिहास, संस्कृति परम्परा एवं विरासत।
6. अग्रवाल, डॉ0 वासुदेवशरण कला और संस्कृति।
7. वाजपेयी, कृष्णादत्त, भारतीय वास्तुकला का इतिहास।
8. World Heritage Series- Khajuraho- Archaealogical Suvey of India.
9. चित्र संग्रहः–
   1. कन्दरिया महादेव मंदिर
   2. लक्ष्मण मंदिर
   3. चौसठ योगिनी मंदिर
   4. पार्श्वनाथ मंदिर